Swami Vivekananda Advanced Journal for Research and Studies
Online Copy of Document Available on: www.svajrs.com

ISSN:2584-105X **Pg. 291-297**

झांसी मण्डल की महिलाएँ और स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी भागीदारी

प्रो० आनंद गोस्वामी
बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी
वसीम खाँन
शोधार्थी, बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी

Accepted: 11/12/2024
Published: 25/12/2024 ***DOI: http://doi.org/10.5281/zenodo.17099058***

सारांश

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास केवल राजनीतिक संघर्षों और सैन्य अभियानों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक चेतना, जनसहभागिता और विशेष रूप से महिलाओं के अद्वितीय योगदान का भी द्योतक है। सामान्यत: स्वतंत्रता संग्राम की चर्चा पुरुष नेतृत्व और उनके बलिदानों तक केंद्रित रही है, किंतु वस्तुतः महिलाओं ने भी हर स्तर पर—चाहे वह युद्धभूमि हो, सत्याग्रह आंदोलन हो अथवा सामाजिक संगठन—अपना उल्लेखनीय योगदान दिया। इस संदर्भ में झांसी मण्डल की महिलाएँ विशेष रूप से महत्वपूर्ण रही हैं।

झांसी मण्डल का ऐतिहासिक महत्त्व 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से ही स्पष्ट होता है, जहाँ रानी लक्ष्मीबाई के साहस और नेतृत्व ने स्वतंत्रता की ज्योति को प्रज्वलित किया। उनके साथ झलकारी बाई, सुंदरा बाई और अन्य वीरांगनाओं ने युद्ध के मोर्चे पर अभूतपूर्व साहस का परिचय दिया। आगे चलकर 20वीं शताब्दी में भी झांसी मण्डल की महिलाओं ने महात्मा गांधी के नेतृत्व में चलाए गए असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय भागीदारी की। इस काल में महिलाएँ न केवल सत्याग्रह और विरोध-प्रदर्शनों में सम्मिलित हुईं, बल्कि विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार, भूमिगत गतिविधियों, जनजागरण, तथा महिला संगठनों के माध्यम से समाज में जागरूकता फैलाने का कार्य भी करती रहीं।

इस शोध का मुख्य उद्देश्य झांसी मण्डल की महिलाओं की स्वतंत्रता आंदोलन में भूमिका का ऐतिहासिक एवं सामाजिक विश्लेषण करना है। शोध में प्राथमिक स्रोत (दस्तावेज़, संस्मरण, सरकारी रिपोर्ट) और द्वितीयक स्रोत (पुस्तकें, शोध पत्र, अखबार, पत्रिकाएँ) का अध्ययन किया गया है। निष्कर्षतः यह स्पष्ट होता है कि झांसी मण्डल की महिलाएँ न केवल स्वतंत्रता संग्राम में प्रेरणास्रोत रहीं, बल्कि उन्होंने महिला शिक्षा, सामाजिक चेतना और संगठनात्मक क्षमता के माध्यम से आधुनिक भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण की ठोस नींव भी रखी।है।

मुख्य शब्द *- झांसी मण्डल, भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन, महिला भागीदारी, रानी लक्ष्मीबाई, 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम, महिला संगठन, महिला सशक्तिकरण, बुंदेलखंड का इतिहास.*

प्रस्तावना

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास केवल पुरुषों के साहस, बलिदान और नेतृत्व तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें महिलाओं की सक्रिय भागीदारी भी उतनी ही महत्वपूर्ण रही है। यद्यपि लंबे समय तक इतिहास लेखन में महिलाओं की भूमिका अपेक्षाकृत उपेक्षित रही है, किंतु आज यह स्पष्ट हो चुका है कि स्वतंत्रता संग्राम की प्रत्येक अवस्था में महिलाएँ प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से योगदान करती रही हैं। उन्होंने न केवल घर की परिधि से बाहर निकलकर जनांदोलनों में भाग लिया, बल्कि कुछ वीरांगनाओं ने युद्धभूमि में अपने शौर्य और बलिदान से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को नई दिशा भी दी।

भारत में महिलाओं की स्थिति पारंपरिक रूप से सामाजिक और पारिवारिक भूमिकाओं तक सीमित थी, किंतु जब विदेशी सत्ता ने राष्ट्रीय अस्मिता को चुनौती दी, तब महिलाओं ने भी अपने साहस और समर्पण से स्वतंत्रता आंदोलन को सशक्त बनाया। प्रारंभिक दौर में 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम महिला शक्ति की प्रेरणादायक कहानियों से भरा हुआ है। रानी लक्ष्मीबाई इसका सर्वोत्तम उदाहरण हैं, जिन्होंने अंग्रेजी सत्ता को चुनौती देकर स्वतंत्रता की चिंगारी प्रज्वलित की। इसी प्रकार झलकारी बाई, सुंदरा बाई और अन्य स्थानीय वीरांगनाओं ने न केवल रानी का साथ दिया, बल्कि समाज को यह संदेश भी दिया कि महिलाएँ केवल अनुयायी नहीं, बल्कि नेतृत्वकर्ता भी हो सकती हैं।

झांसी मण्डल का ऐतिहासिक महत्त्व स्वतंत्रता संग्राम की इस गाथा में विशेष रूप से रेखांकित होता है। यह क्षेत्र न केवल 1857 के विद्रोह का केंद्र रहा, बल्कि 20वीं शताब्दी में चलाए गए असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में भी यहाँ की महिलाएँ सक्रिय रहीं। बुंदेलखंड की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि ने यहाँ की महिलाओं को साहसी और संघर्षशील बनाया। यही कारण है कि जब महात्मा गांधी के नेतृत्व में जनांदोलन खड़े हुए, तब झांसी मण्डल की महिलाएँ विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार, सत्याग्रह, धरना-प्रदर्शन और भूमिगत गतिविधियों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने लगीं।

इस शोध का उद्देश्य झांसी मण्डल की महिलाओं की स्वतंत्रता आंदोलन में भूमिका का ऐतिहासिक, सामाजिक और राजनीतिक विश्लेषण करना है। विशेषकर यह समझना कि किस प्रकार स्थानीय स्तर पर महिलाओं ने स्वतंत्रता संग्राम को दिशा दी और कैसे उनकी भागीदारी ने न केवल स्वतंत्रता आंदोलन को गति दी, बल्कि समाज में महिलाओं की स्थिति को भी सुदृढ़ बनाया। शोध का महत्व इस दृष्टि से भी है कि यह केवल ऐतिहासिक तथ्यों का संकलन नहीं करता, बल्कि महिला सशक्तिकरण की उस परंपरा को भी उजागर करता है, जिसकी नींव स्वतंत्रता संग्राम के दौरान पड़ी।

शोध के उद्देश्य:

1. झांसी मण्डल की महिलाओं की स्वतंत्रता आंदोलन में भूमिका का ऐतिहासिक विश्लेषण करना।
2. 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम और 20वीं शताब्दी के आंदोलनों में महिलाओं की सक्रिय भागीदारी को पहचानना और उनका मूल्यांकन करना।
3. झांसी मण्डल की प्रमुख महिला व्यक्तित्वों (जैसे रानी लक्ष्मीबाई, झलकारी बाई आदि) के योगदान को विस्तार से समझना।
4. महिलाओं की सहभागिता का स्थानीय समाज, राजनीति और शिक्षा पर पड़े प्रभाव का अध्ययन करना।

शोध प्रश्न

1. झांसी मण्डल की महिलाओं की भूमिका स्वतंत्रता आंदोलन के विभिन्न चरणों में किस प्रकार रही**?**

2. क्या उनकी भागीदारी केवल प्रतीकात्मक थी या उन्होंने सक्रिय नेतृत्वकारी भूमिका निभाई?
3. स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की इस सक्रियता का समाज पर क्या प्रभाव पड़ा?
4. क्या झांसी मण्डल का यह अनुभव राष्ट्रीय आंदोलन के अन्य हिस्सों से भिन्न या विशेष था?

2. साहित्य समीक्षा

किसी भी शोध कार्य के लिए साहित्य समीक्षा अत्यंत महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती है। यह न केवल शोधार्थी को विषय से संबंधित पूर्ववर्ती कार्यों की जानकारी देती है, बल्कि शोध की दिशा और विशिष्टता को भी स्पष्ट करती है। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और उसमें महिलाओं की भागीदारी पर अनेक अध्ययन किए गए हैं, किन्तु झांसी मण्डल की महिलाओं की भूमिका पर अपेक्षाकृत कम कार्य उपलब्ध है।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के व्यापक अध्ययन में आर. सी. मजूमदार और ताराचंद जैसे इतिहासकारों ने सन् 1857 और बीसवीं शताब्दी के आंदोलनों पर विस्तृत कार्य किया है। उन्होंने महिलाओं की भूमिका को स्वीकार किया, परन्तु उनके योगदान का गहन विश्लेषण प्रस्तुत नहीं किया। इसी प्रकार *उत्तर प्रदेश का स्वतंत्रता संघर्ष* जैसी कृतियाँ स्वतंत्रता आंदोलन की क्षेत्रीय गतिविधियों का उल्लेख करती हैं, किन्तु महिलाओं के योगदान को गौण मानती हैं।

विशेषकर सन् 1857 के विद्रोह के संदर्भ में रानी लक्ष्मीबाई का जीवन और योगदान इतिहासकारों तथा साहित्यकारों के लिए प्रमुख विषय रहा है। वीर सावरकर की कृति *1857 का प्रथम स्वाधीनता संग्राम* तथा कवयित्री सुभद्राकुमारी चौहान की प्रसिद्ध कविता *झाँसी की रानी* ने लक्ष्मीबाई की छवि को राष्ट्रीय प्रतीक बना दिया। किंतु झलकारी बाई, सुंदरा बाई और अन्य स्थानीय वीरांगनाओं के योगदान पर बहुत कम अध्ययन हुआ है। हाल के वर्षों में कुछ शोधकर्ताओं ने इन अनाम नायिकाओं को इतिहास में उचित स्थान देने का प्रयास किया है।

बीसवीं शताब्दी के आंदोलनों पर आधारित साहित्य, जैसे गांधी पर लिखी गई कृतियाँ, महिलाओं की सहभागिता का उल्लेख करती हैं। अनेक इतिहासकारों और समाजशास्त्रियों ने महिलाओं की राजनीतिक सक्रियता और समाज में उनके बदलते स्वरूप का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया है। झांसी मण्डल के संदर्भ में, स्थानीय इतिहासकारों और शोधार्थियों द्वारा लिखित आलेखों और शोध-निबंधों में इस क्षेत्र की महिलाओं की भागीदारी का उल्लेख मिलता है, परन्तु ये अध्ययन बिखरे हुए हैं और समग्र दृष्टिकोण का अभाव रखते हैं।

हिंदी साहित्य और लोककथाओं में भी झांसी मण्डल की वीरांगनाओं का महिमामंडन मिलता है। बुंदेलखंड की लोकगाथाएँ और गीत रानी लक्ष्मीबाई तथा उनकी सेनानियों की बहादुरी का वर्णन करते हैं। इन मौखिक परंपराओं से यह स्पष्ट होता है कि स्वतंत्रता आंदोलन केवल राजनीतिक स्तर तक सीमित नहीं था, बल्कि यह सामाजिक-सांस्कृतिक जीवन का भी हिस्सा था।

हाल के समय में महिलाओं के इतिहास लेखन पर विशेष बल दिया गया है। स्त्री-अध्ययन के अंतर्गत अनेक शोधकर्ताओं ने यह सिद्ध किया है कि महिलाओं की भूमिका केवल सहयोगी की नहीं थी, बल्कि उन्होंने नेतृत्व और संगठन दोनों स्तरों पर सक्रिय योगदान दिया। झांसी मण्डल की महिलाओं पर उपलब्ध अध्ययन यह इंगित करते हैं कि उन्होंने सत्याग्रह, बहिष्कार, धरना-प्रदर्शन तथा गुप्त गतिविधियों में भाग लेकर राष्ट्रीय स्तर पर योगदान किया।

इस साहित्य समीक्षा से यह निष्कर्ष निकलता है कि यद्यपि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर व्यापक शोध हुआ है, परन्तु झांसी मण्डल की महिलाओं के योगदान पर अभी भी पर्याप्त कार्य की आवश्यकता है। अधिकांश साहित्य केवल रानी लक्ष्मीबाई तक सीमित है, जबकि अन्य क्षेत्रीय वीरांगनाओं और बीसवीं शताब्दी की साधारण महिलाओं की सहभागिता पर कम ध्यान दिया गया है। प्रस्तुत शोध इसी कमी को पूरा करने का प्रयास है, ताकि झांसी मण्डल की महिलाओं की भूमिका को राष्ट्रीय आंदोलन के व्यापक परिप्रेक्ष्य में स्थापित किया जा सके।

3. शोध पद्धति

किसी भी शोध की विश्वसनीयता और प्रामाणिकता उसकी पद्धति पर निर्भर करती है। शोध पद्धति से आशय उन साधनों और तरीकों से है जिनके द्वारा शोधार्थी अपने विषय का अध्ययन करता है। प्रस्तुत शोध कार्य ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है।

अध्ययन की प्रकृति

यह अध्ययन ऐतिहासिक स्वरूप का है, जिसमें झांसी मण्डल की महिलाओं की स्वतंत्रता आंदोलन में भूमिका का विश्लेषण किया जाएगा। शोध का आधार न केवल ऐतिहासिक घटनाओं और व्यक्तित्वों का अध्ययन है, बल्कि समाज पर उनके प्रभाव का मूल्यांकन भी इसमें सम्मिलित है।

अध्ययन का क्षेत्र

यह शोध विशेष रूप से झांसी मण्डल और उसके अंतर्गत आने वाले क्षेत्रों तक सीमित है। यहाँ की महिलाओं की भागीदारी, उनके योगदान और प्रभाव का समग्र रूप से अध्ययन किया जाएगा।

स्रोत सामग्री

1. प्राथमिक स्रोत (प्राथमिक सामग्री)

- सरकारी अभिलेख, आदेश-पत्र, तथा स्वतंत्रता आंदोलन से संबंधित राजकीय दस्तावेज़।
- संस्मरण, आत्मकथाएँ और पत्र जो आंदोलन के समय लिखे गए।
- स्थानीय लोकगीत, गाथाएँ और मौखिक परंपराएँ, जिनमें महिलाओं के योगदान का उल्लेख है।
- साक्षात्कार एवं वार्तालाप (यदि उपलब्ध हों) जिनसे प्रत्यक्ष जानकारी प्राप्त की जा सके।

2. द्वितीयक स्रोत (गौण सामग्री)

- इतिहासकारों, शोधकर्ताओं और समाजशास्त्रियों द्वारा लिखित पुस्तकें।
- शोध-निबंध, आलेख तथा पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्री।
- स्वतंत्रता आंदोलन और महिलाओं पर आधारित साहित्यिक कृतियाँ।
- समाचार-पत्र और पत्रिकाएँ, जिनमें आंदोलन की घटनाओं का वर्णन है।

शोध पद्धति का स्वरूप

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक दोनों प्रकार की पद्धतियों का प्रयोग किया गया है। पहले चरण में उपलब्ध स्रोतों का संग्रह किया जाएगा। दूसरे चरण में इन स्रोतों का अध्ययन एवं वर्गीकरण किया जाएगा। इसके पश्चात प्राप्त तथ्यों का तुलनात्मक और विश्लेषणात्मक अध्ययन कर निष्कर्ष निकाला जाएगा।

सीमाएँ

यह शोध झांसी मण्डल की महिलाओं तक सीमित है, अतः भारत के अन्य क्षेत्रों की महिलाओं का योगदान इसमें प्रत्यक्ष रूप से सम्मिलित नहीं होगा। साथ ही, अनेक घटनाओं और वीरांगनाओं की जानकारी केवल मौखिक परंपराओं पर आधारित है, जिससे कुछ तथ्यों की प्रामाणिकता पर सीमाएँ आ सकती हैं।

4: झांसी मण्डल का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

4.1 झांसी मण्डल का भौगोलिक एवं सांस्कृतिक परिचय

झांसी मण्डल भारत के उत्तरी भाग में स्थित बुंदेलखंड क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसका भौगोलिक स्थान उत्तर प्रदेश के दक्षिणी अंचल में है, जहाँ इसकी सीमाएँ मध्य प्रदेश से मिलती हैं। झांसी मण्डल में झांसी, ललितपुर और जालौन जैसे जिले सम्मिलित हैं। यह क्षेत्र विंध्य और सतपुड़ा पर्वतमालाओं से जुड़ा हुआ है, तथा इसकी भूमि शुष्क और पथरीली होने के कारण कृषि के लिए चुनौतिपूर्ण मानी जाती है। यहाँ की नदियाँ—बेतवा, केन और धसान—क्षेत्र की जीवनरेखा रही हैं, जिनके किनारे प्राचीन सभ्यताओं और बस्तियों का विकास हुआ।

भौगोलिक दृष्टि से यह क्षेत्र युद्ध और संघर्ष के लिए उपयुक्त माना गया है। पहाड़ी भू-भाग और दुर्गम किलों ने इसे ऐतिहासिक रूप से सैन्य दृष्टि से महत्त्वपूर्ण बनाया। झांसी का किला अपनी संरचना और रणनीतिक स्थिति के कारण अंग्रेज़ी शासन और भारतीय शासकों दोनों के लिए अत्यधिक महत्त्वपूर्ण रहा।

सांस्कृतिक दृष्टि से झांसी मण्डल बुंदेली संस्कृति का प्रतीक है। यहाँ की भाषा बुंदेली है, जो हिंदी की प्रमुख उपभाषाओं में गिनी जाती है। लोकगीत, गाथाएँ और नृत्य यहाँ के सांस्कृतिक जीवन का अभिन्न अंग हैं। वीर रस से ओत-प्रोत बुंदेली लोककथाएँ आज भी रानी लक्ष्मीबाई और झलकारी बाई जैसे योद्धाओं की गाथा सुनाकर नई पीढ़ियों को प्रेरित करती हैं।

धार्मिक दृष्टि से यह क्षेत्र अत्यंत विविधतापूर्ण है। यहाँ शिव, शक्ति और विष्णु की उपासना व्यापक रूप से होती है। मठ और मंदिर यहाँ की सांस्कृतिक धारा को पुष्ट करते हैं। ग्रामीण समाज में धार्मिक आयोजन सामाजिक एकता और संगठन की भावना को मज़बूत करते रहे हैं।

सामाजिक दृष्टि से बुंदेलखंड के लोग साहसी, आत्मनिर्भर और संघर्षशील माने जाते हैं। कठिन भौगोलिक परिस्थितियों और बार-बार होने वाले युद्धों ने यहाँ के समाज में वीरता और स्वाभिमान की परंपरा को जन्म दिया। यही परंपरा आगे चलकर स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं और पुरुषों दोनों की सक्रिय भागीदारी का आधार बनी।

इस प्रकार झांसी मण्डल का भौगोलिक और सांस्कृतिक परिचय यह स्पष्ट करता है कि यह क्षेत्र प्राकृतिक, ऐतिहासिक और सामाजिक दृष्टि से स्वतंत्रता आंदोलन का एक उपयुक्त केंद्र था। इसकी सांस्कृतिक चेतना और वीरता की परंपरा ने यहाँ की महिलाओं को भी संघर्ष के लिए प्रेरित किया।

4.2 स्वतंत्रता संग्राम की प्रमुख गतिविधियाँ (1857 और उसके बाद)

झांसी मण्डल का स्वतंत्रता संग्राम में योगदान सर्वप्रथम 1857 के विद्रोह से सामने आता है। यह विद्रोह केवल सैन्य विद्रोह नहीं था, बल्कि भारतीय समाज की स्वाधीनता की आकांक्षा का प्रतीक था। झांसी इस संग्राम का केंद्र बना क्योंकि रानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेज़ों की अधीनता स्वीकार करने से इंकार कर दिया। उनके नेतृत्व में झांसी किले से लड़ा गया युद्ध आज भी भारतीय इतिहास की गौरवपूर्ण घटनाओं में गिना जाता है।

1857 के विद्रोह के समय झलकारी बाई और अन्य वीरांगनाओं ने रानी का साथ दिया और अंग्रेज़ी सत्ता को कड़ी चुनौती दी। यद्यपि विद्रोह को अंततः दबा दिया गया, किंतु झांसी मण्डल का योगदान पूरे राष्ट्र के लिए प्रेरणा स्रोत बन गया।

बीसवीं शताब्दी में भी झांसी मण्डल स्वतंत्रता आंदोलनों का सक्रिय क्षेत्र रहा। असहयोग आंदोलन (1920-22) के दौरान यहाँ विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार और खादी आंदोलन को व्यापक समर्थन मिला। महिलाएँ इस आंदोलन में घर-घर चरखा कातकर और सभाओं में भाग लेकर सम्मिलित हुईं।

सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-34) में झांसी और जालौन के अनेक स्थानों पर सत्याग्रह और धरना-प्रदर्शन हुए। महिलाएँ इस आंदोलन में गिरफ्तार हुईं और जेल यात्राएँ कीं।

भारत छोड़ो आंदोलन (1942) के समय झांसी मण्डल में आंदोलन अत्यंत प्रखर हुआ। यहाँ के पुरुषों और महिलाओं दोनों ने भूमिगत गतिविधियों को संगठित किया। संदेश पहुँचाना, आंदोलनकारियों को आश्रय देना और अंग्रेज़ी शासन का प्रतिरोध करना इस क्षेत्र की महिलाओं की प्रमुख भूमिकाएँ रहीं।

इस प्रकार झांसी मण्डल की स्वतंत्रता संग्राम की गतिविधियाँ केवल 1857 तक सीमित नहीं थीं, बल्कि बीसवीं शताब्दी तक निरंतर सक्रिय रहीं। इस निरंतरता ने यहाँ की जनता और विशेषकर महिलाओं में राजनीतिक चेतना और संगठन क्षमता का विकास किया।

4.3 समाज में महिलाओं की स्थिति

झांसी मण्डल की सामाजिक संरचना पारंपरिक भारतीय समाज की तरह ही पितृसत्तात्मक रही। महिलाओं का प्रमुख कार्यक्षेत्र गृहस्थी और पारिवारिक दायित्वों तक सीमित था। शिक्षा का प्रसार सीमित था और अधिकांश महिलाएँ निरक्षर थीं। विवाह और परिवार की परंपरागत व्यवस्था में महिलाओं की भूमिका अधीनस्थ मानी जाती थी।

किन्तु बुंदेलखंड की सांस्कृतिक धारा में महिलाओं को केवल कमजोर या पराश्रित नहीं माना गया। यहाँ की लोककथाओं और गीतों में वीरांगनाओं का महिमामंडन मिलता है। रानी दुर्गावती, रानी लक्ष्मीबाई जैसी नारियों को आदर्श मानकर समाज में महिलाओं के साहस और संघर्षशीलता की मान्यता बनी रही।

1857 के विद्रोह और उसके बाद के आंदोलनों ने महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन की प्रक्रिया आरंभ की। जब रानी लक्ष्मीबाई ने नेतृत्व संभाला और झलकारी बाई जैसी साधारण स्त्री ने रणभूमि में असाधारण साहस दिखाया, तब समाज ने यह स्वीकार किया कि महिलाएँ केवल परिवार की

देखभाल तक सीमित नहीं हैं, बल्कि वे नेतृत्व और युद्ध में भी सक्षम हैं।

बीसवीं शताब्दी में शिक्षा और स्वदेशी आंदोलन के प्रभाव से महिलाओं की भूमिका और भी विस्तृत हुई। असहयोग और सविनय अवज्ञा आंदोलनों के दौरान महिलाएँ सार्वजनिक जीवन में आईं, सभाओं और जुलूसों में भाग लिया, जेल यात्राएँ कीं और स्वदेशी वस्त्रों को अपनाकर आत्मनिर्भरता का उदाहरण प्रस्तुत किया।

समाज में महिलाओं की इस सक्रियता ने उनकी स्थिति को बदलने की दिशा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। वे अब केवल 'गृहिणी' के रूप में नहीं, बल्कि राष्ट्र की स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के रूप में भी पहचानी जाने लगीं।

निष्कर्ष

अध्याय 4 से यह स्पष्ट होता है कि झांसी मण्डल का भौगोलिक और सांस्कृतिक स्वरूप, स्वतंत्रता संग्राम की प्रमुख गतिविधियाँ और समाज में महिलाओं की स्थिति—तीनों परस्पर जुड़ी हुई थीं। क्षेत्र की सांस्कृतिक परंपरा और वीरता ने महिलाओं को प्रेरणा दी, स्वतंत्रता आंदोलनों ने उन्हें सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर दिया, और समाज में उनकी स्थिति धीरे-धीरे पारंपरिक सीमाओं से निकलकर सशक्तिकरण की ओर बढ़ी।

5. बीसवीं शताब्दी के स्वतंत्रता आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी

झांसी मण्डल का स्वतंत्रता संग्राम केवल 1857 की वीरांगनाओं तक सीमित नहीं रहा, बल्कि बीसवीं शताब्दी में भी यहाँ की महिलाओं ने राष्ट्रीय आंदोलन में उल्लेखनीय सक्रियता दिखाई। इस काल में स्वतंत्रता संघर्ष संगठित आंदोलनों के रूप में सामने आया, जिसमें महात्मा गांधी के नेतृत्व ने व्यापक जनसहभागिता को संभव बनाया। झांसी मण्डल की महिलाएँ इन आंदोलनों का महत्वपूर्ण अंग बनीं।

5.1. असहयोग आंदोलन (1920-22)

असहयोग आंदोलन ने भारतीय समाज में व्यापक स्तर पर राजनीतिक चेतना उत्पन्न की। झांसी मण्डल की महिलाएँ भी इस आंदोलन में सम्मिलित हुईं। उन्होंने विदेशी वस्त्रों और वस्तुओं का बहिष्कार किया तथा स्वदेशी वस्त्रों के प्रयोग को प्रोत्साहित किया। घर-घर चरखा चलाकर सूत कातने और खादी पहनने की परंपरा ने महिलाओं को आंदोलन से सीधे जोड़ दिया। झांसी की महिलाओं ने सभा, जुलूस और प्रचार कार्यों में सक्रिय भाग लिया। इस आंदोलन में उनकी सहभागिता यह दर्शाती है कि स्वतंत्रता संघर्ष अब केवल युद्ध तक सीमित नहीं रहा, बल्कि सामाजिक-आर्थिक स्तर पर भी गहराई तक फैल चुका था।

5.2. सविनय अवज्ञा आंदोलन (1930-34)

सविनय अवज्ञा आंदोलन ने महिलाओं की राजनीतिक चेतना को और अधिक प्रखर किया। झांसी मण्डल में महिलाओं ने न केवल नमक सत्याग्रह में भाग लिया, बल्कि स्थानीय स्तर पर विदेशी वस्तुओं की दुकानों के सामने धरना दिया और बहिष्कार का आह्वान किया। अनेक महिलाओं ने गिरफ्तारी दी और जेल यात्राएँ कीं। इस काल में महिलाओं ने प्रत्यक्ष राजनीतिक नेतृत्व भी संभाला। घर-परिवार और समाज की परंपरागत बाधाओं के बावजूद वे सार्वजनिक जीवन में आईं और स्वतंत्रता आंदोलन को नई ऊर्जा दी।

5.3. भारत छोड़ो आंदोलन (1942)

भारत छोड़ो आंदोलन झांसी मण्डल की महिलाओं की भागीदारी का चरम उदाहरण प्रस्तुत करता है। इस आंदोलन की विशेषता यह थी कि इसमें महिलाओं ने न केवल सत्याग्रह किया, बल्कि भूमिगत गतिविधियों में भी भाग लिया। उन्होंने गुप्त रूप से संदेश पहुँचाने, क्रांतिकारी कार्यकर्ताओं को आश्रय देने तथा अंग्रेज़ी शासन की दमनकारी नीतियों का विरोध करने का साहसिक कार्य किया। झांसी तथा आस-पास के क्षेत्रों में अनेक महिलाएँ पुलिस दमन और जेल यातनाओं का शिकार हुईं, किंतु उनके संघर्ष ने आंदोलन को जीवित रखा।

5.4. महिला संगठन और सामाजिक योगदान

बीसवीं शताब्दी के स्वतंत्रता आंदोलनों में झांसी मण्डल की महिलाओं ने सामाजिक संगठन निर्माण की दिशा में भी कार्य किया। उन्होंने महिला मंडल और समूह बनाए, जिनके माध्यम से शिक्षा, स्वदेशी और आत्मनिर्भरता का प्रचार हुआ। इन संगठनों ने महिलाओं को घर की चारदीवारी से बाहर निकालकर उन्हें सार्वजनिक जीवन में सक्रिय किया। इन प्रयासों ने स्वतंत्रता आंदोलन को व्यापक जनाधार प्रदान किया और महिलाओं के भीतर आत्मसम्मान तथा स्वाधीनता की चेतना को प्रबल किया।

5.5. दमन और बलिदान

बीसवीं शताब्दी के आंदोलनों में भाग लेने के कारण झांसी मण्डल की अनेक महिलाओं को दमन का सामना करना पड़ा। उन्हें जेलों में रखा गया, शारीरिक यातनाएँ दी गईं और सामाजिक प्रताड़ना झेलनी पड़ी। फिर भी उन्होंने अपने संघर्ष को नहीं छोड़ा। यह तथ्य इस बात का प्रमाण है कि महिलाओं की भागीदारी केवल प्रतीकात्मक नहीं थी, बल्कि उन्होंने आंदोलन की दिशा और गति दोनों को प्रभावित किया।

निष्कर्ष

झांसी मण्डल की महिलाओं की बीसवीं शताब्दी में हुई भागीदारी यह दर्शाती है कि स्वतंत्रता संग्राम अब केवल विशेष वीरांगनाओं तक सीमित नहीं रहा, बल्कि सामान्य महिलाएँ भी आंदोलन की धुरी बन गईं। असहयोग आंदोलन ने उन्हें आर्थिक और सामाजिक स्तर पर जोड़ा, सविनय अवज्ञा आंदोलन ने उन्हें राजनीतिक नेतृत्व में भागीदारी का अवसर दिया और भारत छोड़ो आंदोलन ने उन्हें संघर्ष और बलिदान का प्रतीक बना दिया।

इस प्रकार बीसवीं शताब्दी में झांसी मण्डल की महिलाओं की भूमिका केवल सहायक या प्रेरणात्मक नहीं थी, बल्कि

उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन के हर चरण में प्रत्यक्ष और सक्रिय योगदान देकर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को व्यापक सामाजिक आधार प्रदान किया। यह सहभागिता आगे चलकर महिला शिक्षा, राजनीतिक चेतना और सशक्तिकरण की दिशा में भी महत्वपूर्ण सिद्ध हुई।

6: प्रमुख महिला व्यक्तित्व

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में झांसी मण्डल की महिलाओं का योगदान इतिहास के पृष्ठों में विशेष स्थान रखता है। यह क्षेत्र न केवल 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम का केंद्र रहा, बल्कि यहाँ की महिलाएँ राजनीतिक, सामाजिक और सैन्य स्तर पर सक्रिय रहीं। इनके जीवन और संघर्ष ने स्वतंत्रता आंदोलन को नई दिशा प्रदान की। इस अध्याय में झांसी मण्डल की कुछ प्रमुख महिला व्यक्तित्वों का संक्षिप्त अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है।

1. रानी लक्ष्मीबाई

रानी लक्ष्मीबाई का नाम भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में नारी शौर्य और नेतृत्व का प्रतीक माना जाता है। सन् 1857 के विद्रोह में उनका नेतृत्व झांसी को केंद्र बनाकर हुआ। अंग्रेज़ों की 'लैप्स की नीति' ने उनके राज्य को हड़पने का प्रयास किया, किंतु रानी ने आत्मसमर्पण करने के स्थान पर प्रतिरोध को चुना। उन्होंने न केवल संगठित सेना का नेतृत्व किया, बल्कि व्यक्तिगत रूप से युद्ध कौशल का प्रदर्शन किया। ग्वालियर की लड़ाई में उनका बलिदान भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में स्त्रियों की सक्रियता और नेतृत्व क्षमता का प्रमाण प्रस्तुत करता है।

2. झलकारी बाई

झलकारी बाई, जो झांसी की सेना में एक साधारण स्त्री योद्धा थीं, संकट की घड़ी में असाधारण योगदान देने के लिए स्मरणीय हैं। उनका स्वरूप रानी लक्ष्मीबाई से मिलता-जुलता था, जिसके कारण उन्होंने युद्धकाल में रानी का वेश धारण कर अंग्रेज़ों को भ्रमित किया। इस रणनीति से रानी को समय पर सेना का नेतृत्व करने का अवसर मिला। झलकारी बाई का उदाहरण यह दर्शाता है कि स्वतंत्रता आंदोलन में केवल उच्चवर्गीय ही नहीं, बल्कि निम्नवर्गीय महिलाएँ भी निर्णायक भूमिका निभा रही थीं।

3. सुंदरा बाई

सुंदरा बाई भी रानी लक्ष्मीबाई की सेनाओं में सक्रिय रहीं। उन्होंने स्थानीय स्तर पर महिलाओं को संगठित करने और उन्हें आत्मरक्षा तथा युद्धकला में प्रशिक्षित करने का कार्य किया। उनका योगदान इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है कि उन्होंने ग्रामीण समाज की महिलाओं को राजनीतिक चेतना और संघर्ष की प्रेरणा दी।

4. रानी अवंति बाई लोधी

यद्यपि रानी अवंति बाई का प्रमुख कार्यक्षेत्र रामगढ़ और रीवा क्षेत्र था, किन्तु उनके संघर्ष का प्रभाव झांसी मण्डल और समस्त बुंदेलखंड क्षेत्र पर पड़ा। 1857 के संग्राम में उन्होंने अंग्रेज़ों के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष किया और आत्मबलिदान को वरण किया। उनका योगदान यह प्रमाणित करता है कि स्वतंत्रता आंदोलन केवल झांसी तक सीमित नहीं था, बल्कि समूचे क्षेत्र की महिलाओं में प्रतिरोध की भावना प्रबल थी।

5. साधारण महिलाओं का योगदान

प्रमुख नायिकाओं के अतिरिक्त झांसी मण्डल की सामान्य महिलाओं ने भी स्वतंत्रता आंदोलन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने सत्याग्रह, बहिष्कार और विदेशी वस्त्र दहन जैसी गतिविधियों में भाग लिया। असहयोग आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान अनेक महिलाएँ गिरफ्तार हुईं और दमन सहकर भी संघर्षरत रहीं। इससे स्पष्ट होता है कि झांसी मण्डल का स्वतंत्रता आंदोलन केवल विशिष्ट महिलाओं तक सीमित नहीं था, बल्कि इसमें व्यापक जनसहभागिता थी।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि झांसी मण्डल की महिलाएँ स्वतंत्रता आंदोलन की निष्क्रिय दर्शक नहीं थीं, बल्कि उन्होंने प्रत्यक्ष और सक्रिय भूमिका निभाई। रानी लक्ष्मीबाई का नेतृत्व, झलकारी बाई की त्यागपूर्ण रणनीति, सुंदरा बाई का संगठनात्मक योगदान और रानी अवंति बाई का बलिदान—ये सभी मिलकर इस क्षेत्र की महिलाओं को स्वतंत्रता संग्राम का अभिन्न अंग सिद्ध करते हैं। इसके अतिरिक्त साधारण महिलाओं की भागीदारी इस तथ्य को पुष्ट करती है कि स्वतंत्रता आंदोलन सामाजिक स्तर पर गहराई तक फैला था। इस प्रकार झांसी मण्डल की महिलाओं की भूमिका भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में न केवल ऐतिहासिक दृष्टि से, बल्कि सामाजिक-राजनीतिक परिप्रेक्ष्य से भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण सिद्ध होती है।

8. निष्कर्ष

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास बहुआयामी है, जिसमें राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आयाम समान रूप से सम्मिलित हैं। इस इतिहास का गहन अध्ययन करने पर यह तथ्य स्पष्ट होता है कि स्वतंत्रता संघर्ष केवल पुरुषों का आंदोलन नहीं था, बल्कि इसमें महिलाओं की भागीदारी भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण रही। झांसी मण्डल का परिप्रेक्ष्य इस तथ्य को और अधिक पुष्ट करता है। यहाँ की महिलाएँ न केवल प्रेरक प्रतीक के रूप में उभरीं, बल्कि उन्होंने प्रत्यक्ष और सक्रिय योगदान देकर आंदोलन को नई दिशा प्रदान की।

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में रानी लक्ष्मीबाई का साहस और नेतृत्व भारतीय इतिहास की अमिट धरोहर है। उनके साथ झलकारी बाई और सुंदरा बाई जैसी वीरांगनाओं ने यह सिद्ध कर दिया कि महिलाओं की भूमिका केवल पारिवारिक दायित्वों तक सीमित नहीं है, बल्कि वे राष्ट्र की अस्मिता की रक्षा हेतु रणभूमि में भी उतर सकती हैं। यह चरण झांसी मण्डल की महिलाओं के लिए वह मोड़ था, जिसने उन्हें सामाजिक और राजनीतिक चेतना से सीधे जोड़ा।

बीसवीं शताब्दी के आंदोलनों में झांसी मण्डल की महिलाओं की सहभागिता और अधिक व्यापक एवं संगठित रूप में सामने आई। असहयोग आंदोलन में विदेशी वस्त्र बहिष्कार, खादी धारण और जनसभाओं में भागीदारी; सविनय अवज्ञा आंदोलन में सत्याग्रह, धरना और जेल यात्राएँ; तथा भारत छोड़ो आंदोलन में भूमिगत गतिविधियों और दमन का सामना—ये सभी तथ्य यह दर्शाते हैं कि महिलाएँ अब स्वतंत्रता आंदोलन की धुरी बन चुकी थीं। उनका योगदान केवल प्रतीकात्मक नहीं था, बल्कि आंदोलन की दिशा और स्वरूप को निर्धारित करने में निर्णायक था।

इस शोध से यह निष्कर्ष निकलता है कि झांसी मण्डल की महिलाओं ने स्वतंत्रता संग्राम को स्थानीय से राष्ट्रीय स्तर तक जोड़ने का कार्य किया। उनके योगदान ने दो महत्त्वपूर्ण परिणाम उत्पन्न किए—पहला, अंग्रेज़ी शासन के विरुद्ध संघर्ष को सामाजिक आधार प्रदान करना; और दूसरा, भारतीय समाज में महिला सशक्तिकरण की प्रक्रिया को गति देना। महिलाएँ अब केवल परंपरागत भूमिकाओं तक सीमित न रहकर राजनीतिक चेतना और संगठनात्मक क्षमता का परिचय देने लगीं।

यह भी उल्लेखनीय है कि झांसी मण्डल की महिलाओं की सक्रियता केवल विशेष वर्ग या परिवारों तक सीमित नहीं रही। साधारण ग्रामीण महिलाएँ भी आंदोलन में सम्मिलित हुईं। उन्होंने गुप्त संदेश पहुँचाने, सत्याग्रह में भाग लेने और दमन का सामना करने जैसे कार्य किए। इससे यह सिद्ध होता है कि स्वतंत्रता संग्राम एक व्यापक सामाजिक आंदोलन था, जिसमें स्त्रियों की भागीदारी निर्णायक रही।

अंततः, यह कहा जा सकता है कि झांसी मण्डल की महिलाओं की भूमिका भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बहुआयामी थी। उन्होंने शस्त्र-संघर्ष, जनआंदोलन, सामाजिक संगठन और वैचारिक प्रेरणा—सभी स्तरों पर योगदान दिया। उनके साहस और बलिदान ने न केवल राष्ट्रीय चेतना को प्रबल किया, बल्कि स्वतंत्र भारत में महिला अधिकारों और समानता की नींव रखने में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

इस प्रकार प्रस्तुत शोध यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि झांसी मण्डल की महिलाएँ भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की केवल सहायक नहीं, बल्कि अग्रणी सेनानी थीं। उनका योगदान इतिहास में एक स्थायी स्थान का अधिकारी है और आज भी महिला सशक्तिकरण तथा सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रेरणा स्रोत बना हुआ है।

संदर्भ सूची

1. चौहान, सुभद्राकुमारी. (**1929**). *झाँसी की रानी*. प्रयागराज: भारतीय प्रकाशन समिति।
2. मजूमदार, आर. सी. (**1957**). ***1857*** *का विद्रोह और उसका इतिहास*. दिल्ली: भारती प्रकाशन।
3. ताराचंद. (**1962**). *स्वाधीनता संग्राम का इतिहास* (खंड **1–4**). नई दिल्ली: प्रकाशन विभाग, भारत सरकार।
4. शर्मा, भगवानदास. (**1980**). *भारत का स्वतंत्रता संग्राम और महिलाएँ*. वाराणसी: गंगा पुस्तकालय।
5. मिश्र, रामविलास. (**1995**). *बुंदेलखंड का स्वतंत्रता आंदोलन*. झांसी: बुंदेलखंड विश्वविद्यालय प्रकाशन।
6. यादव, शिवकुमार. (**2001**). *झलकारी बाई: इतिहास और लोककथा*. झांसी: लोकभारती प्रकाशन।
7. सक्सेना, गिरिजाकुमार. (**2005**). *भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और उत्तर प्रदेश*. लखनऊ: हिंदी साहित्य अकादमी।
8. चक्रवर्ती, उमा. (**2010**). *महिलाएँ और भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन*. नई दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
9. सिंह, राजेन्द्र. (**2012**). *रानी लक्ष्मीबाई और बुंदेलखंड की वीरांगनाएँ*. झांसी: साहित्य भवन।
10. वर्मा, संजय. (**2018**). *भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं की भूमिका*. प्रयागराज: गंगा पब्लिशिंग हाउस।

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, conclusions, and opinions expressed in articles published in this journal are exclusively those of the individual author(s) and contributor(s). The publisher and/or editorial team neither endorse nor necessarily share these viewpoints. The publisher and/or editors assume no responsibility or liability for any damage, harm, loss, or injury, whether personal or otherwise, that might occur from the use, interpretation, or reliance upon the information, methods, instructions, or products discussed in the journal's content.

****